प्रैस विज्ञप्ति

हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद द्वारा आयोजित एक दिवसीय शैक्षणिक नेतृत्व कार्यशाला सम्पन्न

समाज उपयोगी नागरिक तैयार करना शिक्षक का कर्तव्य–प्रो. बृज किशोर कुठियालाा

पंचकूला, 21 जनवरी। वर्तमान समय में शिक्षकों को शैक्षणिक नेतृत्व की भूमिका को सशक्त बनाते हुए समाज उपयोगी नागरिक तैयार करने पर बल देना होगा। इसके माध्यम से ही शिक्षक समाज के विश्वास को बरकरार रख पायेगें। उपरोक्त विचार आज हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के अध्यक्ष ने रेड बिशप सभागार में एक दिवसीय शैक्षणिक नेतृत्व कार्यशाला के प्रारम्भिक सत्र के दौरान व्यक्त किए। उल्लेखनीय है कि हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन स्थानीय रेड बिशप सभागार में किया गया था। जिसका विषय था शैक्षणिक नेतृत्व।

हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद द्वारा आयोजित शैक्षणिक नेतृत्व कार्यशाला में प्राचार्यो के सामने प्रायोगिक सत्र भी रखे गये। प्रायोगिक सत्र में मेरी ही–मेरा भी–मेरा नही ने प्राचार्यो की पांच–पांच टोलियों के माध्यम से ऐसे 10 महत्वपूर्ण कार्य का उल्लेख करने के लिए कहा गया जो प्राचार्यो को करने ही होते है। इसी प्रकार 5–5 ऐसे महत्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख भी किया गया जो प्रिंसीपल को डेलीगेट करने होते है तथा ऐसे 5 कार्यों के बारे में भी चर्चा की गयी जो प्रिंसीपल को नही करने होते है। दूसरे प्रायोगिक सत्र के दौरान सभी प्राचार्यो के सामने विद्यार्थियों की एक समस्या को रखा गया जिसमें प्रत्येक प्राचार्य को अपना व्यक्तिगत निर्णय तथा प्रिंसीपल होने के नाते कमेटी के माध्यम से उस समस्या का कैसे निराकरण हो इसका भी अभ्यास कराया गया। तीसरे अभ्यास सत्र में प्राचार्यों के सामने अभ्यास बदलते रंग में उनके अपने–अपने रोल प्ले के बारे में चर्चा की गई। टोली में कुलपति, कुलसचिव, डीन कॉलेज, प्रिंसीपल, डीन शैक्षणिक पदो के लिए प्राचार्यों को रोल आवंटन किया गया जिसमें उनकी पद के अनुसार उनकी भूमिका के बारे में प्रायोगिक अभ्यास कराया गया। प्रायोगिक अभ्यास सत्र में सभी प्राचार्यों ने बढ़–चढ़ कर भाग लेते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रायोगिक सत्र से उनकी नेतृत्व क्षमता में बढ़ोतरी हुई है।

कार्यशाला में प्रायोगिक सत्र के दौरान परिषद के उपाध्यक्ष प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा ने प्राचार्यो को सम्बोधित करते हुए कहा कि नेतृत्व करते हुए यह ध्यान देना चाहिए कि नेतृत्व करने वाले में अहम की भावना उत्पन्न न हो। नेतृत्व के लिए जरूरी है कि टीम के रूप में कार्य किया जाए। सामूहिकता के भाव के साथ यदि कार्य करेगें तो उसके परिणाम बेहतर होगें और यदि हम अपना स्वयं का आदर्श दूसरों के सामने रखेगें तो परिणाम ओर ज्यादा सुखद होगें। नेतृत्व करते समय इस बात का विशेष तौर पर ध्यान रखे कि हमारी प्रस्तुति रोचक हो और यदि हम स्वयं को उसमें शामिल करेगें तो किसी अन्य व्यक्ति को जल्दी सिखा पायेगें।

कार्यशाला के दौरान मुक्त चिंतन का समय भी आंगतुक प्राचार्यों को दिया गया जिसमें उन्होंने नेतृत्व के दौरान आने वाली कठिनाईयों के विषय मे चर्चा करते हुए कई सुझाव भी दिए। इस सत्र में परिषद के परामर्शदाता के.के. अग्निहोत्री ने प्राचार्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें इन आने वाली कठिनाईयों के रास्ते तैयार करने है तथा अपनी क्षमता और योग्यता को बढ़ाते हुए इन समस्याओं का निराकरण करना है।

कार्यशाला के समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए परिषद के अध्यक्ष प्रो. कुठियाला ने कहा कि अकेले कार्य करने की बजाय टीम के रूप में कार्य करने से नेतृत्व क्षमता बढ़ेगी। अच्छे लीडर होने के नाते कार्य को बांट कर करना तथा समस्याओं की पहचान कर उनका निराकरण करने का प्रयास करना चाहिए। अमृत काल में हमें एक–दूसरे पर दोषारोपण करने की बजाय आगे के लिए रास्ते बनाने है। यहीं गुण सही अर्थों में हमारी शैक्षणिक लीडरशिप को ओर मजबूती प्रदान करेगें। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी अकेडमिक लीडरशिप पर बल दिया गया है और परिषद का भी मुख्य कार्य है कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाया जाए और इसके लिए व्यवस्था में परिवर्तन, नवाचार और प्रशिक्षण के माध्यम से प्रयास करने की आवश्यकता है।

परिषद के अध्यक्ष प्रो. कुठियाला ने कहा कि इस तरह की कार्यशाला निश्चित तौर पर हमारी शैक्षणिक नेतृत्व की क्षमता को बढ़ायेगी जिसका उपयोग हम अपने संस्थान को ओर बेहतर बनाने में उपयोग करेगें। समाज हमें श्रेष्ठतम लोगों के समुदाय में शामिल रखे इसके लिए हमें भी समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी की अहसास होना चाहिए। इस तरह के प्रशिक्षण के माध्यम से हम अपनी नेतृत्व क्षमता के बल पर न केवल अपने संस्थान को बुलंदियों पर ले जाएगें अपितु समाज हित में इस नेतृत्व क्षमता के आधार पर कार्य कर पायेगें।

HARYANA
TOURISM
Come, holiday with us !